समयाहियाणि । सेसं सुगमं ।

उक्कस्सेण वीसं बावीसं तेवीसं चउवीसं पणुवीसं[1] छव्वीसं सत्तावीसं अट्ठावीसं एगुणतीसं तीसं एक्कत्तीसं बत्तीसं तेत्तीसं सागरोवमाणि ॥ ३६ ॥

एदाणि उक्कसाउआणि जहण्णाउअविहाणेण जोजेयव्वाणि। एदेहि जहण्णुक्कस्ससुत्तेहि देसामासिएहि सूइदत्थस्स परूवणा कीरदे । तं जहा— आणदो पाणदो पुप्फओ त्ति आणद-पाणदकप्पेसु तिण्णि पत्थडा। तेसिमाउअस्स पुव्वुत्तकमेण आणिदसंदिट्ठी एसा— | १९ | १९ १/२ | २० | । सादंकरो आरणो अच्चुदो त्ति आरण-अच्चुदकप्पेसु तिण्णि पत्थडा। एदेसिमाउआणं संदिट्ठी— | २० १/३ | २१ २/३ | २२ | । एत्तो उवरि सुदंसणो अमोघो सुप्पबुद्धो जसो-

---

एक समय अधिक बत्तीस सागरोपमप्रमाण जघन्य आयु है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

उत्कृष्टसे बीस, बाईस, तेईस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस, इकतीस, बत्तीस, और तेतीस, सागरोपम काल तक जीव आनत-प्राणत आदि विमानवासी देव रहते हैं ॥ ३६ ॥

इन उत्कृष्ट आयुओंको जघन्य आयुके विवरणानुसार योजित कर लेना चाहिये ।अर्थात् आनत-प्राणतमें उत्कृष्ट आयु बीस सागरोपम, व आरण-अच्युतमें बाईस सागरोपम है । नौ ग्रैवयकोंमें क्रमशः २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, और ३१ सागरोपम है । नौ अनुदिशोंमें बत्तीस सागरोपम है और चार अनुत्तर विमानोंमें तेतीस सागरोपम उत्कृष्ट आयु है ।

जघन्य और उत्कृष्ट आयुस्थितिका निर्देश करनेवाले उपर्युक्त दोनों सूत्र देशामर्शक हैं, अतएव उनके द्वारा सूचित किये गये अर्थकी यहां प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—

आनत-प्राणत कल्पोंमें तीन प्रस्तर हैं— आनत, प्राणत और पुष्पक । इनमें पूर्वोक्त क्रमसे निकाला गया आयुप्रमाण इस प्रकार है— आनतमें १९, प्राणतमें १९ १/२ और पुष्पकमें २० सागरोपम ।

आरण-अच्युत कल्पोंमें तीन प्रस्तर हैं— सातंकर, आरण और अच्युत । इनकी आयुका प्रमाण निकालनें पर सातंकरमें २० १/३, आरणमें २१ २/३ और अच्युतमें २२ सागरोपम आता है ।

अच्युत कल्पसे ऊपर नौ ग्रैवेयकोंके नौ प्रस्तर हैं जिनके नाम हैं— सुदर्शन

---

[1] ब. प्रतौ पंचवीसं इति पाठः ।

हरो सुभद्दो सुविसालो सुमणसो सोमणसो पीदिकरो त्ति एदे णव पत्थडा णवगेवज्जेसु[1]। एदेसिमाउवाणं वड्ढि-हाणीओ णत्थि, पादेक्कमेक्केक्कपत्थडस्स पाहण्णियादो। तेसिमाउआणं संदिट्ठी एसा– |२३|२४|२५|२६|२७|२८|२९|३०|३१|। णवाणुद्दिसेसु आइच्चो णाम एक्को चेव पत्थडो। तम्हि आउअं एत्तियं होदि |३२|। पंचाणुत्तरेसु सव्वट्ठसिद्धिसण्णिदो एक्को चेव पत्थडो। विजय-वेजयंत[2]-जयंत-अवराजिदाणं जहण्णाउअं समयाहियबत्तीससागरोवममेत्तमुक्कस्सं तेत्तीससागरोवमाणि। जहण्णुक्कस्सभेदाभावादो सव्वट्ठसिद्धिविमाणस्स पुध परूवणा कीरदे—

सव्वट्ठसिद्धियविमाणवासियदेवा केवचिरं कालादो होंति? ॥ ३७ ॥

गयत्थमेदं।

जहण्णुक्कस्सेण तेत्तीस सागरोवमाणि ॥ ३८ ॥

एदं पि सगमं।

इंदियाणुवादेण एइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ३९ ॥

अमोघ सुप्रबद्ध यशोधर, सुभद्र सुविशाल, सुमनस् सौमनस् और प्रीतिकर। इनमें आयुओंकी हानिवृद्धि नहीं है क्योंकि प्रत्येकमें एक एक प्रस्तरकी प्रधानता है। इनकी आयुओंकी संदृष्टि यह है। (मूलमें देखिये)

नौ अनुदिशोंमें आदित्य नामका एक ही प्रस्तर है जिसमें आयुका प्रमाण ३२ सागरोपम है।

पांच अनुत्तरोंमें सर्वार्थसिद्धि नामका एक ही प्रस्तर है। इनमें विजय, वैजयन्त जयन्त और अपराजित, इन चार विमानोंकी जघन्य आयु एक समय अधिक बत्तीस सागरोपमप्रमाण तथा उत्कृष्ट आयु तेत्तीस सागरोपमप्रमाण है।

सर्वार्थसिद्धि विमानमें जघन्य और उत्कृष्ट आयुका भेद नहीं है, इसलिये उसकी पृथक् प्ररूपणा की जाती है।

जीव सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

जघन्यसे और उत्कृष्टसे वहां तेतीस सागरोपमप्रमाण काल तक जीव सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव रहते हैं ॥ ३८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

इन्द्रियमार्गणानुसार जीव एकेन्द्रिय जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३९ ॥

---

१ अ. क. प्रतिषु गेवज्जेसु इति पाठः। २ क प्रतौ वेयवंत इति पाठः।

सुगममेदं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४० ॥

कुदो? अणप्पिदविदिएहितो[1] एइंदिएसुप्पज्जिय घादखुद्दाभवग्गहणमेत्तकालमच्छिय अण्णिदियं गदस्स तदुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ४१ ॥

कुदो? अणप्पिदविदिएहितो एइंदिएसुप्पज्जिय आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-पोग्गलपरियट्टे कुंभारचक्कं व परियट्टिय अण्णिदियं गयस्स तदुवलंभादो ।

बादरेइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४२ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४३ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जासंखेज्जाओ ओसप्पिणिउस्सप्पिणीओ ॥ ४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ४० ॥

क्योंकि, अन्य अविवक्षित इन्द्रियोंवाले जीवोंमेंसे आकर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर, कदलीघातसे घातितक्षुद्रभवग्रहणमात्र काल रहकर अन्य द्वीन्द्रियादि जीवोंमें गये हुए जीवके सूत्रोक्त कालप्रमाण पाया जाता है ।

उत्कृष्टसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक जीव एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ४१ ॥

क्योंकि, अविवक्षित इन्द्रियोंवाले जीवोंमेंसे आकर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर आवलीके असंख्यात भागमात्र पुद्गलपरिवर्तन कुम्भारके चक्रके समान परिभ्रमण करके द्वीन्द्रियादिक अन्य जीवोंमें गये हुए जीवके सूत्रोक्त काल घटित होता है ।

बादर एकेन्द्रिय जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहणमात्र काल तक वहां बादर एकेन्द्रिय जीव रहते हैं ॥ ४३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीप्रमाण काल तक वहां बादर एकेन्द्रिय जीव रहते हैं ॥ ४४ ॥

---

[1] अ. स. प्रतौः–विदरहितो इतिपाठः ।

अणप्पिदिदिएहिंतो बादरेइंदिएसुप्पज्जिय अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमसंखेज्जा-संखेज्ज-ओसप्पिणी-उवसप्पिणीमेत्तकालं कुलालचक्कं व तत्थेव परिभमिय णिग्गयस्स एदस्स संभवुवलंभा।

बादरएइंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ॥ ४५ ॥

सुगममेदं।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ४६ ॥

पज्जत्तएसु अंतोमुहुत्तं मोत्तूण अण्णस्स जहण्णाउअस्स अणुवलंभादो।

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ४७ ॥

अणप्पिदिदिएहिंतो बादरेइंदियपज्जत्तएसुप्पज्जिय संखेज्जाणि वाससहस्साणि तत्थेव परिभमिय णिग्गयस्स तदुवलंभादो। बहुवं कालं तत्थ किण्ण हिंडदे? ण, केवलणाणादो विणिग्गयजिणवयणस्सेदस्स सयलपमाणेहिंतो अहियस्स विसंवादाभावा।

अविवक्षित इन्द्रियोंवाले जीवोंमेंसे आकर बादर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होकर अंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी प्रमाण काल तक वहां कुम्हारके चक्केके समान उसी पर्यायमें परिभ्रमण करके निकलनेवाले जीवके सूत्रोक्त कालका होना संभव है।

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव वहां कितने काल तक रहते हैं? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव वहां रहते हैं ॥ ४६ ॥

क्योंकि, पर्याप्तक जीवोंमें अन्तर्मुहूर्तके सिवाय अन्य जघन्य आयु पायी नहीं जाती।

उत्कृष्टसे संख्यात हजार वर्षों तक बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव वहां रहते हैं ॥ ४७ ॥

क्योंकि, अन्य इन्द्रियोंवाले जीवोंमेंसे आकर बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें उत्पन्न होकर संख्यात हजार वर्षों तक उसी पर्यायमें परिभ्रमण करके निकले हुए जीवके सूत्रोक्त काल पाया जाता है।

शंका—संख्यात हजार वर्षोंसे अधिक काल तक जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें क्यों नहीं भ्रमण करता?

समाधान—नहीं, क्योंकि केवलज्ञानसे निकले हुए व समस्त प्रमाणोंसे अधिक प्रमाणभूत इस जिनवचनके संबंधमें विसंवाद नहीं हो सकता।

बादरेइंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ४९ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५० ॥

अणेयसहस्सवारं तत्थेव पुणो पुणो उप्पण्णस्स वि अंतोमुहुत्तं मोत्तूण उवरि आउठिदीणमणुवलंभादो ।

सुहुमेइंदिया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५२ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ ५३ ॥

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण काल तक बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव वहां रहते हैं ॥ ४९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक एकेन्द्रिय बादर अपर्याप्त जीव वहां रहते हैं ॥ ५० ॥

क्योंकि अनेक हजारों वार उसी पर्यायमें पुनः पुनः उत्पन्न हुए जीवके भी अन्तर्मुहूर्तको छोड और ऊपरकी आयुस्थितियां नहीं पायी जातीं ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव वहां कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव क्षुद्रभवग्रहण काल तक रहते हैं ॥ ५२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय असंख्यात लोकप्रमाण काल तक जीव वहां रहते हैं ॥ ५३ ॥

अण्णिदिएहिंतो आगंतूण सुहुमेइंदिएसुप्पज्जिय असंखेज्जलोगमेत्तकालमद्दहिदजलं व तत्थेव परिभमिय णिग्गयम्मि तदुवलंभादो। बादरट्ठिदीदो किमट्ठं सुहुमट्ठिदी ण अब्भहिया जादा? ण, बादरेइंदिएसु आउवबंधमाणवारेहिंतो सुहुमेइंदिएसु आउवबंधमाणवाराणमसंखेज्जगुणत्तादो। तं कधं णव्वदे? एदम्हादो जिणवयणादो।

सुहुमेइंदिया पज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति? ॥ ५४ ॥

सुगमं।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५५ ॥

एदं पि सुगमं।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५६ ॥

अन्य इन्द्रियोंवाले जीवोंमेंसे आकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमें उत्पन्न होकर असंख्यात लोकप्रमाण काल तक तपाये हुए जलके समान उसी पर्यायमें परिभ्रमण करके निकले हुए जीवमें सूत्रोक्त काल पाया जाता है।

शंका—बादर एकेन्द्रिय जीवोंकी स्थितिसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी स्थिति अधिक क्यों नहीं हुई?

समाधान—नहीं, क्योंकि बादर एकेन्द्रिय जीवोंमें जितनी बार आयुबन्ध होता है उनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके असंख्यातगुणी अधिक बार आयुके बंध होते हैं।

शंका—यह कैसे जाना कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके बादर एकेन्द्रियोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणी बार अधिक आयुबंध होते हैं?

समाधान—इस जिनवचनसे ही यह बात जानी जाती है।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव कितने काल तक वहां रहते हैं? ॥ ५४ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक रहते हैं ॥ ५५ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव वहां रहते हैं ॥ ५६ ॥

अणेयसहस्सवारं तत्थुप्पण्णे वि अंतोमुहुत्तादो अहियभवट्ठिदीए अणुवलंभा।

सुहुमेइंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ५८ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ५९ ॥

सुहुमेइंदियपज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च उक्कस्सभवट्ठिदिपमाणमंतोमुहुत्तमेव सुहुमाणं पुण भवट्ठिदी असंखेज्जा लोगा, कधमेदं ण विरुज्झदे ? ण, पज्जत्तापज्जत्तएसु असंखेज्जालोगमेत्तवारगदिमागदिं च करेंतस्स तदविरोधादो ।

बीइंदिया तीइंदिया चउरिंदिया बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६० ॥

क्योंकि, अनेक सहस्रवार उसी उसी पर्यायमें उत्पन्न होने पर भी अन्तर्मुहूर्तसे अधिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी भवस्थिति नहीं पायी जाती।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीव कितने काल वहां तक रहते हैं ? ॥ ५७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव रहते हैं ॥ ५८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

उत्कृष्टसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव अन्तर्मुहुर्त काल तक वहां रहते हैं ॥ ५९ ॥

शंका—सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंकी उत्कृष्ट भवस्थितिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त ही है, जब कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी भवस्थिति असंख्यात लोकप्रमाण है, यह बात परस्पर विरुद्ध क्यों नहीं है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव असंख्यात लोकप्रमाण वार पर्याप्तक और अपर्याप्तकोंमें आवागमन करते हैं, इसलिये उनके अविच्छिन्न पर्याप्त व पर्याप्त कालके अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होने हुए भी सूक्ष्म पर्यायसम्बन्धी कालके असंख्यात लोकप्रमाण होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, तथा द्वीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय पर्याप्त व चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीव कितने काल तक वहां रहते हैं ॥ ६० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमंतोमुहुत्तं ॥ ६१ ॥

एत्थ जहाकमेण बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियाण सगंतब्भूदअपज्जत्तसंभवादो खुद्दाभवग्गहणमेदेसिं चेव पज्जत्ताणमंतोमुहुत्तं, तत्थ अपज्जत्ताणमभावादो ।

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ६२ ॥

अणप्पिदिदिएहिंतो आगंतूण बारसवास-एगुणवण्णरादिदिय-छम्मासाउएसु बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिएसुप्पज्जिय बहुवारं तत्थेव परियट्टिय णिग्गयस्स वुत्तकाल-संभवादो ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ६४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहणमात्र काल व अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव विकलत्रय व विकलत्रय पर्याप्त होते हैं ॥ ६१ ॥

यहां क्रमानुसार द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंमें उनके अपर्याप्तोंका भी अन्तर्भाव है अतएव उन्हीं अपर्याप्तोंकी अपेक्षा उनका जघन्यकाल क्षुद्रभवग्रहणप्रमाण होता है। उन्हीं द्वीन्द्रियादिक जीवोंमे पर्याप्तोंका काल अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तोंका अभाव है।

उत्कृष्टसे विकलत्रय व विकलत्रय पर्याप्त जीव संख्यात हजार वर्षों तक वहां रहते हैं ॥ ६२ ॥

अविवक्षित इन्द्रियवाले जीवोंमेंसे आकर बारह वर्ष, उनंचास रात्रिदिन तथा छह मासकी आयुवाले द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय जीवोंमें उत्पन्न होकर बहुत वार उन्हीं पर्यायोंमें परिभ्रमण करके निकलनेवाले जीवके सूत्रोक्त कालका होना संभव है।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त व चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीव कितने काल तक वहां रहते हैं ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे विकलत्रय अपर्याप्त जीव क्षुद्रभवग्रहण काल तक वहां रहते हैं ॥ ६४ ॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ६५ ॥

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमंतोमुहुत्तं ॥ ६७ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि सागरोवमसदपुधत्तं ॥ ६८ ॥

पंचिंदियाणं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियसागरोवमसहस्साणि । एत्थ सागरोवम-सहस्समिदि एगवयणेण होदव्वं, बहूणं सहस्साणमभावादो ? ण, सागरोवमेसु बहुत्त-

---

उत्कृष्टसे विकलत्रय अपर्याप्त जीव अन्तर्मुहूर्त काल तक वहां रहते हैं ॥ ६५ ॥

ये दोनों सूत्र सुगम हैं ।

पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव कितने काल तक वहां रहते हैं ? ॥ ६६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल व अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय पर्याप्त रहते हैं ॥ ६७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक सागरोपमसहस्र व सागरोपमशत-पृथक्त्व काल तक जीव क्रमशः पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय पर्याप्त रहते हैं ॥ ६८ ॥

पंचेन्द्रिय जीवोंका काल पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक एक हजार सागरोपमप्रमाण होता है ।

शंका——इस सूत्रमें ‘सागरोपमसहस्रं’ ऐसा एक वचनात्मक निर्देश होना चाहिये था न कि बहुवचनात्मक, क्योंकि सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके भवस्थितिकालमें अनेक सहस्र सागरोपम नहीं होते ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सागरोपमोंमें बहुपना पाया जाता है ।

दंसणादो। ण सहस्ससद्दस्स पुव्वणिवादो होदि त्ति असंकणिज्जं, लक्खाणुसारेण लक्खणस्स पवुत्तिदंसणादो[1]। पज्जत्ताण पुण सागरोवमसदपुधत्तं। कधमेदं णव्वदे ? जहासंखणायादो।

पंचिंदियअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६९ ॥

सुगमं।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७० ॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७१ ॥

एदाणि दो वि[2] सुत्ताणि[3] सुगमाणि।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७२ ॥

एदं पि सुगमं।

यदि बहुवचनका संबंध सहस्रसे न होकर सागरोपमोंसे था तो सहस्र शब्दको सागरोपमके पश्चात् न रखकर उससे पूर्व विशेषणरूपसे रखना था, ऐसी आशंका नहीं करना चाहिये। क्योंकि लक्ष्यके अनुसार लक्षणकी प्रवृत्ति देखी जाती है।

परन्तु पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका काल सागरोपमशतपृथक्त्व ही है।

शंका-- पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंका सागरोपमशतपृथक्त्व काल कैसे जाना है ?

समाधान--सूत्रमें यथासंख्य न्यायसे पूर्वोक्त प्रमाण काल जाना जाता है।

जीव पंचेन्द्रिय अपर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव पंचेन्द्रिय अपर्याप्त रहते हैं ॥ ७० ॥

उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव पंचेन्द्रिय अपर्याप्त रहते हैं ॥ ७१ ॥

ये दोनों सूत्र सुगम हैं।

कायमार्गणानुसार जीव पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक व वायुकायिक कितने काल तक रहते हैं ॥ ७२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है।

---

१ मु. प्रतौ पुवुत्तिदंसणादो इति पाठः। २ अ. क. प्रत्योः एदाणि वि इति पाठः। ३ अ. क. प्रत्योः सुत्ताणि इति पाठो नास्ति।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७३ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा ॥ ७४ ॥

अणप्पिदकायादो आगंतूण अप्पिद[1]कायम्मि समुप्पज्जिय असंखेज्जलोगमेत्त-कालं तत्थ परियट्टिय णिग्गमम्मि तदुवलंभादो ।

बादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ-बादरवणप्फदिपत्तेय-सरीरा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ७६ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी ॥ ७७ ॥

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक व वायुकायिक रहते हैं ॥ ७३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे असंख्यातलोकप्रमाण काल तक जीव पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक व वायुकायिक रहते हैं ॥ ७४ ॥

क्योंकि, अविवक्षित कायसे आकर व विवक्षित कायमें उत्पन्न होकर असंख्यातलोकमात्र काल तक उसी पर्यायमें परिभ्रमण करके निकलनेवाले जीवके सूत्रोक्त काल पाया जाता है ।

जीव बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजकायिक, बादर वायुकायिक व बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ७५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव बादर पृथिवीकायादिक पूर्वोक्त पर्यायोंमें रहते हैं ॥ ७६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे कर्मस्थितिप्रमाण काल तक जीव बादर पृथिवीकायादिक पूर्वोक्त पर्यायोंमें रहते हैं ॥ ७७ ॥

---

१ अ. क. प्रत्योः अणप्पिद इति पाठः ।

कम्मट्ठिदि त्ति वुत्ते सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमेत्ता घेत्तव्वा, कम्मविसेसट्ठिदिं मोत्तूण कम्मसामण्ण[1]ट्ठिदिग्गहणादो । के वि आइरिया सत्तरिसागरोवमकोडाकोडिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे बादरपुढविकायादीणं कायट्ठिदी होदि त्ति भणंति। तेसिं कम्मट्ठिदिववएसो कज्जे कारणोवयारादो । एद वक्खाणमत्थि त्ति कधं णव्वदे ? कम्मट्ठिदिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे बादरट्ठिदी होदि त्ति परियम्मवयणण्णहाणुववत्तीदो । तत्थ सामण्णेण बादरट्ठिदी होदि त्ति जदि वि उत्तं तो वि पुढविकायादीणं बादराणं पत्तेयकायट्ठिदी घेत्तव्वा, असंखेज्जासंखेज्जाओ ओस्सप्पिणी-उस्सप्पिणीओ त्ति सुत्तम्मि बादरट्ठिदिपरूवणादो ।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउकाइय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ७८ ॥

सुगमं ।

सूत्रमें कर्मस्थिति ऐसा कहनेपर सत्तर सागरोपम कोडाकोडिप्रमाण कालका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि कर्मविशेषकी स्थितिको छोडकर कर्मसामान्यकी स्थितिका यहां ग्रहण किया गया है । कितने आचार्य सत्तर सागरोपम कोडाकोडिको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणा करनेपर बादर पृथिवीकायिक जीवोंकी कायस्थितिका प्रमाण होता है ऐसा कहते हैं। किन्तु उनकी यह कर्मस्थिति संज्ञा कार्यमें कारणके उपचारसे सिद्ध होती है।

शंका—ऐसा व्याख्यान है, यह कैसे जाना जाता है।

समाधान—'कर्मस्थितिको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर बादरस्थिति होती है' ऐसे परिकर्मके वचनकी अन्यथा उपपत्ति बन नहीं सकती, इससे पूर्वोक्त व्याख्यान जाना जाता है।

वहांपर यद्यपि सामान्यसे 'बादरस्थिति होती है' ऐसा कहा है, तो भी पृथिवीकायादिक बादर जीवोंमें प्रत्येककी काय स्थिति ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि, सूत्रमें बादरस्थितिका प्ररूपण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीप्रमाण किया गया है ।

जीव बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजकायिक, बादर वायुकायिक, व बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ७८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

---

१ मु. प्रतौ कम्मस्साउट्ठिदि इति पाठः।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ ७९ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण संखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ८० ॥

अणप्पिदकायादो आगंतूण बादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ-बादर-वणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तएसु जहाकमेण बावीसवस्ससहस्स-सत्तवस्ससहस्स-तिण्णि-दिवस-तिण्णिवस्ससहस्स-दसवस्ससहस्साउएसु उप्पज्जिय संखेज्जवस्ससहस्साणि तत्थ-च्छिय णिग्गयस्स तदुवलंभादो ।

बादरपुढवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ-बादरवणप्फदिपत्तेय-सरीरअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ८१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८२ ॥

जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव बादर पृथिवीकायिक आदि पर्याप्त रहते हैं ॥ ७९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे संख्यात हजार वर्षों तक जीव बादर पृथिवीकायिकादि पर्याप्त रहते हैं ॥ ८० ॥

अविवक्षित कायसे आकर बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक बादर तेज-कायिक, बादर वायुकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तकोंमें यथा-क्रमसे बाईस हजार वर्ष, सात हजार वर्ष, तीन दिवस, तीन हजार वर्ष व दश हजार वर्षकी आयुवाले जीवोंमें उत्पन्न होकर व संख्यात हजार वर्षों तक उसी पर्यायमें रहकर निकलनेवाले जीवके सूत्रोक्त प्रमाण काल पाया जाता है ।

जीव बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजकायिक, बादर वायु-कायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ॥ ८१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव बादर पृथिवीकायिक आदि अपर्याप्त रहते हैं ॥ ८२ ॥

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ८३ ॥

एदाणि वि सुगमाणि ।

सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुम-वाउकाइया सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुमणिगोदजीवा पज्जत्ता अपज्जत्ता सुहुमेइंदियपज्जत्त-अपज्जत्ताणं भंगो ॥ ८४ ॥

जहा सुहुमेइंदियाणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं उक्कस्सेण असंखेज्जा लोगा तधा एदेसिं सुहुमपुढविआदीणं छण्हं जहण्णुक्कस्सकाला[1] होंति । जहा सुहुमेइंदियपज्जत्ताणं जहण्णकालो उक्कस्सकालो वि अंतोमुहुत्तं होदि तहा सुहुमपुढविकायादीणं[2] छण्हं पज्ज-त्ताणं जहण्णुक्कस्सकाला होंति । जहा सुहुमेइंदियअपज्जत्ताणं जहण्णकालो खुद्दाभव-ग्गहणमुक्कस्सो अंतोमुहुत्तं तहा एदेसिं छण्हमपज्जत्ताणं जहण्णुक्कस्साला होंति त्ति भणिदं होदि । सुहुमणिगोदग्गहणमणत्थयं, सुहुमवणप्फदिकाइयग्गहणेणेव सिद्धीदो ।

अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव बादर पृथिवीकायिक आदि अपर्याप्त रहते हैं ॥ ८३ ॥

ये सूत्र भी सुगम हैं ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजकायिक, सूक्ष्म वायुकायिक, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और सूक्ष्म निगोदजीव तथा इन्हींके पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके कालका निरूपण क्रमसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त व सूक्ष्म एके-न्द्रिय अपर्याप्तोंके समान है ॥ ८४ ॥

जिस प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंका जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात लोकप्रमाण काल है उसी प्रकार इन सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिक छहोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल होता हैं । जिस प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जघन्य काल और उत्कृष्ट काल भी अन्तर्मुहूर्त होता है उसी प्रकार सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिक छह पर्याप्तोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल होता है । जिस प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका जघन्य काल क्षुद्रभवग्रहण और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त होता है उसी प्रकार इन छह अपर्याप्तोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल होता है । यह इस सूत्रद्वारा कहा गया है ।

शंका—सूत्रमें सूक्ष्म निगोदजीवोंका ग्रहण करना अनर्थक है, क्योंकि, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंके ग्रहणसे ही उनका ग्रहण सिद्ध है । तथा सूक्ष्म वनस्पतिकायिक

---

१ अ. ब. स. प्रतिषु छण्हं इति पाठो नास्ति । २ ब. प्रतौ सुहुमपुढवियादीणं इति पाठः ।

ण च सुहुमवणप्फदिकाइयवदिरित्ता सुहुमणिगोदा अत्थि, तहाणुवलंभादो ? णेदं जुज्जदे, जत्थ सुत्तं णत्थि तत्थ आइरियवयणाणं वक्खाणाणं च पमाणत्तं होदि । जत्थ पुण जिणवयविणिग्गयं सुत्तमत्थि ण तत्थ एदेसिं पमाणत्तं । सुहुमवणप्फदिकाइए भणिदूण सुहुमणिगोदजीवा सुत्तम्मि परूविदा, तदो एदेसिं पुध परूवणण्णहाणुववत्तीदो सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोदाणं विसेसो अत्थि त्ति णव्वदे ।

वणप्फदिकाइया एइंदियाणं भंगो ॥ ८५ ॥

जहा एइंदियाणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणमुक्कस्सो अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं तहा वणप्फदिकाइयाणं[1] जहण्णकालो उक्कस्सकालो च होदि त्ति उत्तं होइ ।

णिगोदजीवा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ८७ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ ८८ ॥

जीवोंसे भिन्न सूक्ष्म निगोद जीव नहीं हैं, क्योंकि वैसा पाया नहीं जाता ?

समाधान—यह शंका ठीक नहीं है, क्योंकि, जहां सूत्र नहीं है वहां आचार्यवचनोंकी और व्याख्यानोंकी प्रमाणता होती है । किन्तु जहां जिन भगवानके मुखसे निर्गत सूत्र है वहां इनकी प्रमाणता नहीं होती । चूंकि सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंका पृथक्से कथन कर सूत्रमें सूक्ष्म निगोदजीवोंका निरूपण किया गया है, अतः इनके पृथक् प्ररूपणकी अन्यथानुपपत्तीसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और सूक्ष्म निगोदजीवोंमें भेद है, यह जाना जाता है ।

वनस्पतिकायिक जीवोंके कालका कथन एकेन्द्रिय जीवोंके समान है ॥ ८५ ॥

जिस प्रकार एकेन्द्रियोंका जघन्य काल क्षुद्रभवग्रहण और उत्कृष्टकाल असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल है उसी प्रकार वनस्पतिकायिक जीवोंका जघन्य काल और उत्कृष्ट काल होता है, यह सूत्रका अर्थ है ।

निगोदजीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक निगोदजीव उस पर्यायमें रहते हैं ॥ ८७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे अढाई पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण काल तक निगोदजीव उस पर्यायमें रहते हैं ? ॥ ८८ ॥

---

१ ब. प्रतौ काइया इति पाठः ।

अणिगोदजीवस्स णिगोदेसु उप्पण्णस्स उक्कस्सेण अड्ढाइज्जपोग्गलपरियट्टेहितो उवरि परिभमणाभावादो ।

बादरणिगोदजीवा बादरपुढविकाइयाणं भंगो ॥ ८९ ॥

जहा बादरपुढविकाइयाणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणमुक्कस्सो कम्मट्ठिदी तहा एदेसिं जहण्णुक्कस्सकाला होंति । जहा बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं कालो तहा बादरणिगोदपज्जत्ताणं होदि । णवरि बादरपुढविकाइयपज्जत्ताणं उक्कस्साउट्ठिदी संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, बादरणिगोदपज्जत्ताणं पुण उक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं । जहा बादरपुढविकाइयअपज्जत्ताणं जहण्णकालो खुद्दाभवग्गहणमुक्कस्सकालो अंतोमुहुत्तं तहा बादरणिगोदअपज्जत्ताणं जहण्णुक्कस्सालो त्ति भणिदं होदि ।

तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं अंतोमुहुत्तं ॥ ९१ ॥

क्योंकि जो निगोदपर्यायसे भिन्न जीव निगोदजीवोंमें उत्पन्न होता है उसका उत्कृष्टसे अढाई पुद्गलपरिवर्तनोंसे ऊपर परिभ्रमण नहीं होता है ।

बादर निगोदजीवोंका काल बादर पृथिवीकायिकोंके समान है ॥ ८९ ॥

जिस प्रकार बादर पृथवीकायिकोंका जघन्य काल क्षुद्रभवग्रहण और उत्कृष्टकाल कर्मस्थितिप्रमाण है, उसी प्रकार बादर निगोदजीवोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल होता है । जिस प्रकार बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका काल है उसी प्रकार बादर निगोद पर्याप्तोंका काल होता है । विशेष केवल इतना है कि बादर पृथवीकायिकपर्याप्तोंकी उत्कृष्ट आयुस्थिति संख्यात हजार वर्ष है, परन्तु बादर निगोद पर्याप्तोंका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ही है । जिस प्रकार बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका जघन्य काल क्षुद्रभवग्रहण और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है उसी प्रकार बादर निगोद अपर्याप्तकोंका जघन्य और उत्कृष्ट काल होता है ।

जीव त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त कितनें काल तक रहते हैं ? ॥ ९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव क्रमसे त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त रहते हैं ॥ ९१ ॥

सुगममेदं पि ।

उक्कस्सेण बे सागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडीपुधत्तेणब्भहियाणि बे सागरोवमसहस्साणि ॥ ९२ ॥

तसकाइयाणं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि बे सागरोवमसहस्साणि, तेसिं पज्जत्ताणं बे सागरोवमसहस्सं चेव । कुदो ? जहासंखणायादो ।

तसकाइयअपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं ॥ ९४ ॥

सुगमं ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९५ ॥

एदं पि सुगमं ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

उत्कृष्टसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम और केवल दो हजार सागरोपम काल तक जीव क्रमशः त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त रहते हैं ॥ ९२ ॥

त्रसकायिकोंका उत्कृष्ट काल पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम और त्रसकायिक पर्याप्तोंका केवल दो हजार सागरोपम ही है, क्योंकि, यहां यथासंख्यन्याय लगता है ।

जीव त्रसकायिक अपर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण काल तक जीव त्रसकायिक अपर्याप्त रहते हैं ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव त्रसकायिक अपर्याप्त रहते हैं ॥ ९५ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगी पंचवचिजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९६ ॥

'जोगिणो' इदि[1] बहुवयणणिद्देसो किण्ण कदो ? ण, पंचण्हं पि एयत्ताविणाभावेण एयवयणुववत्तीदो। सेसं सुगमं।

जहण्णेण एयसमओ ॥ ९७ ॥

मणजोगस्स ताव एगसमयपरूवणा कीरदे। तं जहा– एगो कायजोगेण अच्छिदो कायजोगद्धाए खएण मणजोगे आगदो, तेणेगसमयमच्छिय विदियसमये मरिय कायजोगी जादो। लद्धो मणजोगस्स एगसमओ। अधवा कायजोगद्धाखएण मणजोगे आगदे बिदियसमए वाघादिदस्स पुणरवि कायजोगो चेव आगदो। लद्धो बिदियपयारेण एगसमओ। एवं सेसाणं चदुण्हं मणजोगाणं पंचण्हं वचिजोगाणं च एगसमयपरूवणा दोहि पयारेहि णादूण कायव्वा।

योगमार्गणानुसार जीव पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ९६ ॥

शंका—'जोगिणो' इस प्रकार यहां बहुवचनका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पांचोंके ही एकत्वके साथ अविनाभाव होनेसे यहां एकवचन उचित है। शेष सुगम है।

जघन्यसे एक समय तक जीव पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी रहते हैं ॥ ९७ ॥

प्रथमतः मनोयोगके एक समयकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है— एक जीव काययोगसे स्थित था, वह काययोगकालके क्षयसे मनोयोगमें आया, उसके साथ एक समय रहकर व द्वितीय समयमें मरकर काययोगी हो गया। इस प्रकार मनोयोगका जघन्य काल एक समय प्राप्त हो जाता है। अथवा काययोगकालके क्षयसे मनोयोगके प्राप्त होनेपर द्वितीय समयमें व्याघातको प्राप्त हुए उसके फिर भी काययोग ही प्राप्त हो गया। इस तरह द्वितीय प्रकारसे एक समय प्राप्त होता है। इसी प्रकार शेष चार मनोयोगों और पांच वचनयोगोंके भी एक समयकी प्ररूपणा दोनों प्रकारोंसे जानकर करना चाहिये।

---

१ मु. प्रतौ इदि वयणादो इति पाठो नास्ति।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं ॥ ९८ ॥

अणप्पिदजोगादो अप्पिदजोगं गंतूण उक्कस्सेण तत्थ अंतोमुहुत्तावट्ठाणं पडि विरोहाभावादो ।

कायजोगी केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ९९ ॥

किमट्ठमेत्थ एगवयणणिद्देसो कदो ? ण एस दोसो, एगजीवं मोत्तूण बहूहि जीवेहि एत्थ पओजणाभावादो ।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं ॥ १०० ॥

अणप्पिदजोगादो कायजोगं गदस्स जहण्णकालस्स वि अंतोमुहुत्तपमाणं मोत्तूण एगसमयादिपमाणणुवलंभादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १०१ ॥

अणप्पिदजोगादो कायजोगं गंतूण तत्थ सुट्ठु दीहद्धमच्छिय कालं करिय एइंदियेसु उप्पण्णस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणि परियट्टिदस्स कायजोगुक्कस्सकालुवलंभादो ।

उत्कृष्टसे अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी रहते हैं ॥ ९८ ॥

क्योंकि, अविवक्षित योगसे विवक्षित योगको प्राप्त होकर उत्कृष्टसे वहां अन्तर्मुहूर्त तक अवस्थान होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

जीव काययोगी कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ९९ ॥

शंका—यहां एकवचनका निर्देश किस लिये किया ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एक जीवको छोडकर बहुत जीवोंसे यहां प्रयोजन नहीं है ।

जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव काययोगी रहता है ॥ १०० ॥

क्योंकि, अविवक्षित योगसे काययोगको प्राप्त हुए जीवके जघन्य कालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्तको छोडकर एक समयादिरूप नहीं पाया जाता ।

उत्कृष्टसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक जीव काययोगी रहता है ॥ १०१ ॥

क्योंकि, अविवक्षित योगसे काययोगको प्राप्त होकर और वहां अतिशय दीर्घ काल तक रहकर कालको करके एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवके आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण पुद्गलपरिवर्तन भ्रमण करते हुए जीवके काययोगका उत्कृष्ट काल पाया जाता है ।

---

१ अ. स. प्रत्योः होंति इति पाठः ।

ओरालियकायजोगी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०२ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १०३ ॥

मणजोगेण वचिजोगेण वा अच्छिय तेसिमद्धाखएण ओरालियकायजोगं गदबिदियसमए कालं कादूण जोगंतरं गदस्स एगसमयदंसणादो ।

उक्कस्सेण बावीसं वाससहस्साणि देसूणाणि ॥ १०४ ॥

बावीसवाससहस्साउअपुढवीकाइएसु उप्पज्जिय सव्वजहण्णेण कालेण ओरालियमिस्सद्धं गमिय पज्जत्तिगदपढमसमयप्पहुडि जाव अंतोमुहुत्तूणबावीसवाससहस्साणि ताव ओरालियकायजोगुवलंभादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी आहारकायजोगी केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १०५ ॥

सुगमं[1] ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १०६ ॥

जीव औदारिककाययोगी कितने काल तक रहता है ? ॥ १०२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे एक समय तक जीव औदारिककाययोगी रहता है ॥ १०३ ॥

क्योंकि, मनोयोग अथवा वचनयोगके साथ रहकर उनके कालक्षयसे औदारिककाययोगको प्राप्त होनेके द्वितीय समयमें मरकर योगान्तरको प्राप्त हुए जीवके एक समयकाल देखा जाता है ।

उत्कृष्टसे बाईस हजार वर्षों तक जीव औदारिकाययोगी रहता है ॥ १०४ ॥

क्योंकि, बाईस हजार वर्षकी आयुवाले पृथिवीकायिकोंमें उत्पन्न होकर सर्वजघन्य कालसे औदारिकमिश्रकालको विताकर पर्याप्तिको प्राप्त होनेके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्त कम बाईस हजार वर्ष तक औदारिककाययोग पाया जाता है ।

जीव औदारिकमिश्रकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और आहारककाययोगी कितने काल तक रहता है ॥ १०५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जघन्यसे एक समय तक जीव औदारिकमिश्रकाययोगी आदि रहता है ॥१०६॥

---

१ मु. प्रती सुगमं इति पाठो नास्ति ।